Appointments

हिन्दी - विभाग डॉ० कविता कुमारी सिंह

पीजी द्वितीय सेमेस्टर

विषय – देश का विभाजन और उपन्यास का शोध-भाग

विभाजन किसी देश की भूमि को नहीं होती, विभाजन लोगों की भावनाओं को भी होती है। विभाजन का दर्द वो ही अच्छी तरह से जानते हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से इसको सहा है। बँटवारे के दौरान जिन्हें अपना घर-बार छोड़ना पड़ा, अपनों को खोना पड़ा, यह दर्द आज भी उन्हें सालता है।

'कमलेश्वर' का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' तो मानवता के दरवाजे पर इतिहास और समय की एक दस्तक है। इस उम्मीद के साथ कि भारत ही नहीं दुनियाँ भर में एक के बाद एक दूसरे पाकिस्तान बनाने की लहू से लथपथ यह परम्परा अब खत्म हो। इन्हीं वर्तमान वास्तविकताओं को पृष्ठभूमि बनाकर रचे गये। कितने पाकिस्तान में कमलेश्वर तमाम विभाजनों के विरुद्ध आवाज उठाने के साथ-साथ शांति के लिए प्रतिसंस्कृति

की तलाश करते हैं।
प्रतिरोध के विकल्प की तलाश करते हैं।
'कृष्णा सोबती' के उपन्यास 'गुजरात
पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान' के रूप में
सामने आया है, जिसमें उनके पाकिस्तान स्थित
पंजाब के गुजरात से विस्थापित होकर पहले
दिल्ली में शरणार्थी के रूप में आने और फिर
भारत स्थित गुजरात के सिरोही राज्य में वहाँ
के राजकुमार की गवर्नेस के रूप में नौकरी करने
की कहानी है। अधिकांश उपन्यासों में लिखा
होता है कि उनके पात्र और वर्णित घटनाएँ
काल्पनिक है, लेकिन इसके विपरीत इसमें
सभी पात्र, घटनाएँ वास्तविक और ऐतिहासि
है। 'कृष्णा सोबती' की तुलना केवल 'होलोकॉ
से की जा सकती है। उनकी अनूठी शैली में
वे अपने अनुभव की गहराई से उन वर्षों
सार बताने की कोशिश करती हैं। उन जै
लाखों लोगों की एक आजाद देश बनने

अपने घर, जिन्दगी, इज्जत, माल और खुद
को खोने की कीमत पर मिली।
'शानी' ने 'काला जल' उपन्यास
में आजादी के बाद भारत में रह रहे मुसलमानों की
आर्थिक दशा का चित्रण किया है। जहाँ मुस्लिम
समाज अपनी रूढ़ियों में जकड़ा रहकर अशिक्षा,
गरीबी, असाध्य रोगों का शिकार हो गया। ऐसे
लोगों के लिए पाकिस्तान बनने और न बनने से
क्या फर्क पड़ता है। 'शानी' ने इस समस्या को
आर्थिक रूप से प्रस्तुत कर महत्वपूर्ण कार्य किया है
इसी प्रकार 'बदी उज्जमा' का 'छाको वापसी' देश
विभाजन से उत्पन्न अराजक परिस्थितियों के
परिवेश में निरीह जनता के दुःख-दर्द और पीड़ा
को निरूपित करने वाला एक लघु उपन्यास है।
अपनी धरती से टूटे हुए लोगों के संस्कृति
उखड़ेपन और आत्मपरायेपन को छाको नामक
पात्र द्वारा अभिव्यक्त किया है।
अन्य उपन्यासों में जैसे

~~मुट्ठी~~ मुट्ठी भर कांकर, एक पंखुड़ी की तेज धार, और इन्सान मर गया, तट के बन्धन, भूले बीसरे चित्र, ओस की बूंदें, शहर में कर्फ्यू, टूटी हुई जमीन, जिन्दा मुहावरे जो विभाजन की त्रासदी को गंभीरता के साथ प्रस्तुत करते हैं। विभाजन की त्रासदी को हिन्दी उपन्यासों में सांस्कृतिक संकटों, संबंधों और मूल्यों का विघटन, घिनौने साम्प्रदायिक वैमनस्य के रूप में देखा जा सकता है।

यह विभाजन एक ऐसी त्रासदी थी, जिसके घाव अभी तक पूरी तरह भर नहीं पाये हैं। विभाजन बीसवीं सदी के दक्षिण एशिया की केन्द्रीय ऐतिहासिक घटना थी। मानव इतिहास में कभी भी इतने विराट पैमाने पर आबादी की अदला बदली नहीं हुई जितनी विभाजन के कारण बने भारत और पाकिस्तान के बीच हुई। इस त्रासदी के परिणामों के बारे में पक्के आंकड़े तो उपलब्ध नहीं

हैं, लेकिन आम राय यही है कि कम से कम डेढ़ करोड़ लोग अपना घर-बार छोड़ने पर मजबूर हुए। इस दौरान हुई लूटपाट, बलात्कार और हिंसा में कम से कम पन्द्रह लाख लोगों के मरने और लाखों लोगों के घायल होने का अनुमान है। न सिर्फ देश बटा, बल्कि लोगों के दिल भी बट गये। देश विभाजन के बाद दिलों की विभाजन की व्यथा, अमन चैन की लूट और पीड़ा का एक नया युग शुरू हुआ। आजादी के साथ ही देश भर में अशांति का माहौल कायम हो गया। गाँव-बस्तियाँ आग की लपटों में स्वाहा होने लगी। मानवता का मुखौटा पिघल रहा था और अन्दर सियार की आँखें उग उग आ

हालांकि इस दौरान और इसके बाद भी साहित्यकार अपनी कोशिशों में लगे रहे और दोनों मुल्कों के अवाम के बीच के रिश्तों में गरमाहट लाने की कोशिश करते रहे। सियासत के इतर साहित्य आज भी लाहौर और दिल्ली की अवाम में की बात करती है